श्रेष्ठ संस्कृति हमारे देश की विरासत–दादी हृदय मोहिनी

आबू रोड, 28 जुलाई, निसं। श्रेष्ठ संस्कार ही श्रेष्ठ संस्कृति का संदेश देता है। किसी भी व्यक्ति की पहिचान तथा उसकी महिमा उसके श्रेष्ठ संस्कार और संस्कृति से ही होती है। श्रेष्ठ संस्कृति हमारे देश की विरासत है। असभ्यता के लिए भारत जैसे देश में कोई स्थान नहीं है। उक्त उदगार ब्रह्माकुमारीज संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने व्यक्त किये। वे शान्तिवन में राजयोग साधना द्वारा संस्कारों का परिवर्तन विषय पर आयोजित पांच दिवसीय ध्यान साधना शिविर में देश भर से तीन हजार की संख्या में आयी युवा बहनों को सम्बोधित कर रही थी। ये वे युवा बहने है जिन्होंने अपने पूरे जीवन को विश्व परिवर्तन हेतु संस्था में समर्पित कर दिया है।

आगे उन्होंने कहा कि केवल मनुष्य का जीवन पाना पर्याप्त नहीं है बल्कि संस्कारयुक्त जीवन ही श्रेष्ठ और पूज्यनीय होता है। आज समाज में मूल्यों और संस्कारों का तेजी से पतन हो रहा है। मानवीय मर्यादायें, श्रेष्ठ व्यवहार तथा कर्म केवल किताबों तक ही सीमित होता जा रहा है। इससे दिनोदिन समाज में बुराईयां जन्म लेती जा रही है। युवाओं को अपने श्रेष्ठ विचार तथा श्रेष्ठ आचरण से इसे परिवर्तन करने में अहम भूमिका निभानी होगी।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हमें निरन्तर अपने कर्मों को श्रेष्ठ और दैवी बनाने का प्रयास करना चाहिए। इससे ही हमारी असली पहिचान बनेगी। इसकी पहल हमें पहले स्वयं से करनी होगी। जब हम बदलेंगे तभी दूसरे इसके लिए प्रेरित होंगे। दूसरों को बदलने के लए श्रेष्ठ आचरण सबसे प्रभावशाली प्रेरणा है। मन–वचन और कर्म पर सदैव अटेन्शन का पहरा लगा देना चाहिए। जिससे व्यर्थ कर्म न हो। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र0 कु0 मोहिनी बहन ने कहा कि श्रेष्ठ संस्कारों के निर्माण के लिए गहरी ध्यान–साधना बहुत आवश्यक है।

कार्यक्रम के अन्त में स्व–परिवर्तन कर विश्व परिवर्तन के लिए तथा अपराधमुक्त भारत के नवनिर्माण के लिए उपस्थित युवा बहनों ने अपने स्थान पर खड़े होकर दृढ़ संकल्प लिया। इस अवसर पर अहमदाबाद से आयी ब्र0 कु0 शारदा, ब्रह्माकुमारीज जयपुर की सबजोन इंचार्ज ब्र0 कु0 सुषमा, डा0 निरंजना, ईशू दादी, तथा ब्र0 क0ु मुन्नी बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। यह शिविर का कार्यक्रम पांच दिन तक चलेगा जिससे जीवन में आने वाली बुराईयों के निराकरण कर उसे समाप्त करने तथा जीवन में दैवी मूल्यां को अपनाने के लिए विचार विमर्श किया जायेगा।